हमारे गांव की पांच बातें

Writer : Ahsan Raza Qadri
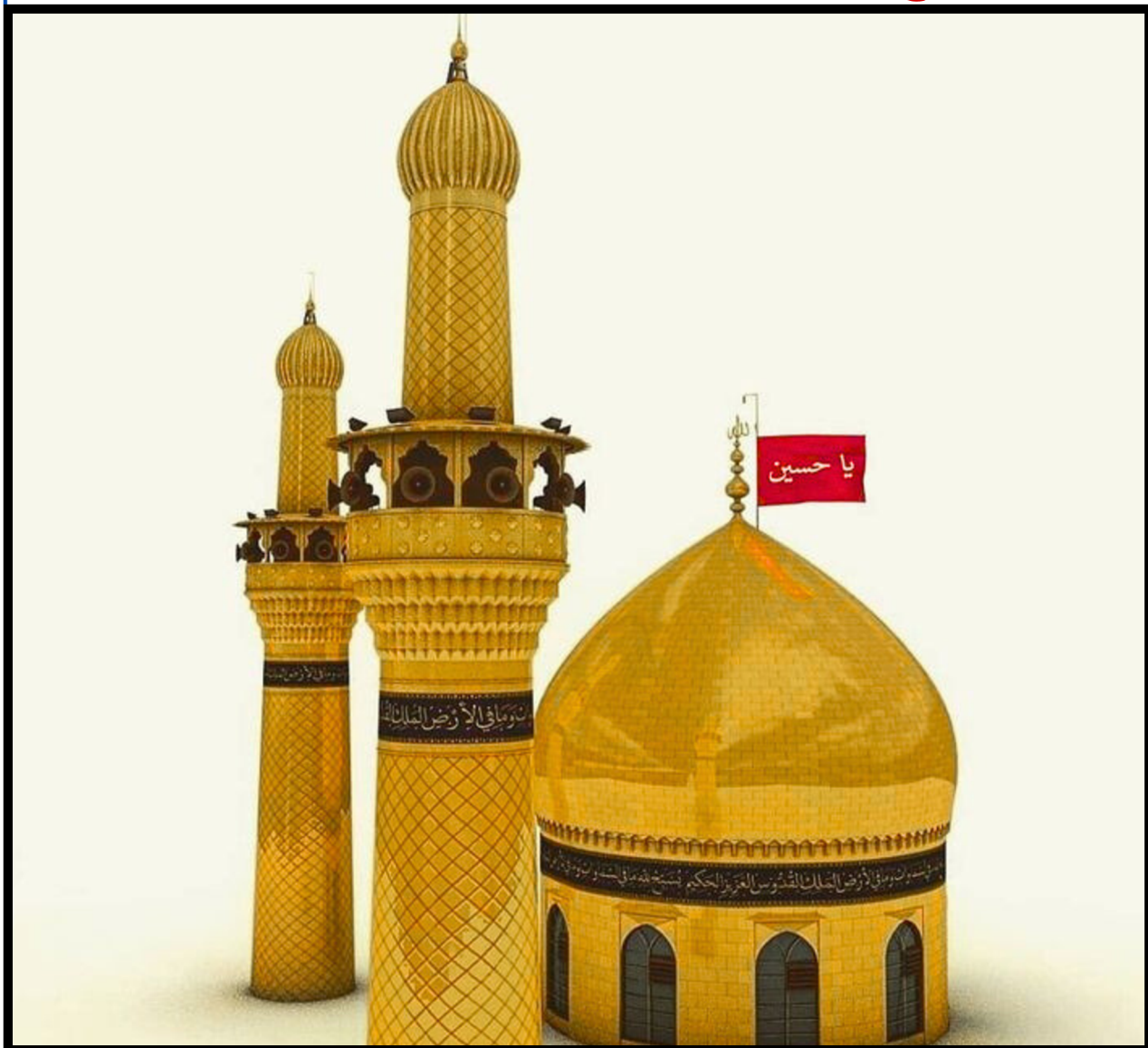
सब तारीफ अल्लाह के लिए है, जिसने सिर्फ "कुन" (हो जा) कहकर पूरी कायनात को बना दिया,
और हमें प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद ﷺ की उम्मत में पैदा करके हम पर बहुत बड़ा एहसान किया।

हम दिल से अपने गांव के उलमा (मौलवी हज़रतों) और नौजवान भाइयों का शुक्रिया अदा करते हैं,
जिन्होंने अपने इल्म (ज्ञान) और जागरूकता से
करीब दस साल पहले हमारे गांव में फैली हुई ग़लत मान्यताओं (गलत अक़ीदे) को खत्म किया।

मगर अफ़सोस, आज भी कुछ बुरी बातें बाकी हैं, जो के अगले सफा में है

पहली बात:
मस्जिद के आसपास, खास तौर पर पूरब और पश्चिम में कुछ लोग ऐसे हैं
जिनको मदरसा और गांव के मौलवियों से बहुत जलन और दुश्मनी है।
इसी जिद में उन्होंने या तो अपनी जेब से पैसा खर्च करके,
या गांव के नौजवानों से चंदा लेकर ढोल-ताशे वगैरह खरीद लिए,
ताकि उलमा को उकसाया जाए, और जो लोग बुराई से बचते हैं
उन्हें भी भड़काया जाए।

क्या इन लोगों ने कुरान की ये आयत नहीं सुनी?

> "जो लोग चाहते हैं कि मुसलमानों में बुराई फैले, उनके लिए दुनिया और आखरत में दर्दनाक सज़ा है।"
(सूरह नूर, 19)

दूसरी बात:
कुछ लोग आज भी अपने बाप-दादाओं के ग़लत तरीकों को पकड़कर बैठे हैं।
जब उन्हें समझाया जाता है कि भाई, यह गलत है, छोड़ दो —
तो जवाब देते हैं:
“हम वही करेंगे जो हमारे बाप-दादा करते आए हैं।”

लेकिन अल्लाह फ़रमाता है:
> “जब उनसे कहा जाए कि अल्लाह के उतारे हुए हुक्म पर चलो,
तो वो कहते हैं — हम तो वही करेंगे जो अपने बाप-दादा को करते देखा है।
चाहे उनके बाप-दादा ना समझ रखते हों और ना ही सही रास्ते पर हों।”
(सूरह बकरह, 170)
इसका मतलब साफ है:
शरीअत के खिलाफ बाप-दादा की नकल करना हराम है।
अगर वो गलत कर रहे हैं, तो हमें भी गलत करने की इजाजत नहीं।

तीसरी बात:
कुछ लोग समझते हैं कि ढोल बजाना या उसमें पैसा लगाना
कोई अच्छा काम है।
ये बहुत बड़ी नादानी है।
ढोल-ताशे बजाना शरीअत में हराम है,
और जो चीज हराम हो, उसमें किसी तरह की मदद करना भी हराम है।

कुरान में साफ कहा गया:

> “गुनाह और ज़्यादती के काम में एक-दूसरे की मदद मत करो।”
(सूरह मायदह, 2)
अगर कोई ढोल बजाना हलाल समझे, तो ये भी कफिराना सोच हो सकती है,
क्योंकि जो चीज़ कुरान-हदीस से हराम साबित हो,
उसे हलाल कहना कुफ्र होता है।

चौथी बात:
कुछ लोग खुद तो ढोल बजाने नहीं जाते,
ना ही खुद देखते हैं,
मगर अपने बच्चों को वहां भेजते हैं
या बच्चों को ढोल बजाने की छूट देते हैं,
और समझते हैं कि हम तो बुराई में शामिल नहीं।

ये भी गलत है।
क्योंकि हमारे बुजुर्ग (आला हज़रत) ने फरमाया —
“हराम काम को देखना या उस पर खुश होना भी हराम है।”
और अगर अपने बच्चों को वहां भेजा, तो
उसका गुनाह भी मां-बाप पर ही आएगा।

पांचवीं बात:
अल्लाह तआला फरमाता है:

> “ऐे ईमान वालों! पूरे के पूरे इस्लाम में दाखिल हो जाओ,
और शैतान के कदमों पर मत चलो।
वो तो तुम्हारा खुला दुश्मन है।”
(सूरह बकरह, 208)

इसलिए जो लोग शैतान के बहकावे में आकर
अपना दीन और दुनिया खराब कर रहे हैं,
हम दुआ करते हैं कि अल्लाह उन्हें हिदायत दे,
और हमारे गांव से ये बुराईयाँ खत्म कर दे,
और हमारी बातों में असर डाले।